समय के हस्ताक्षर

मुनि चन्द्रप्रभ सागर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समय के हस्ताक्षर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समय के हस्ताक्षर

मुनि चन्द्रप्रभ सागर

जयश्री प्रकाशन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आशीर्वाद

आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि जी म.

सत्प्रेरणा

मुनिराज श्री महिमाप्रभ सागर जी

संयोजन

मुनि श्री ललितप्रभ सागर जी

सम्पादन

मिश्रीलाल जैन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक

जयश्री,

जयश्री प्रकाशन,

२२-ए, बुधु ओस्तागर लेन

कलकत्ता-७००००९

प्रथम संस्करण : जनवरी, १९८५

मूल्य : ७ रुपये

मुद्रक

आरोग्य प्रिंटिंग प्रेस,

राजगृह-८०३११६ (बिहार)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञापना

मुनि श्री चन्द्रप्रभ सागर जी हिन्दी के जाने-माने साहित्यकारों में से एक हैं। वस्तुतः उन्होंने जीवन की सकल स्पृहाओं का परित्याग कर साधनापथ अंगीकार करते हुए उन भूमिकाओं की सम्प्राप्ति की है, जो एक विचारक, कवि, लेखक और साधक की सहज साधना कही जा सकती है। युवा होते हुए भी उनके अनुभव और चिन्तन परिपक्व, परिष्कृत तथा प्रभावोत्पादक हैं। उनका साहित्य-सर्जन किसी सम्प्रदाय-विशेष की परिधि में सीमित रह कर नहीं, प्रत्युत् समस्त मानव-जाति के अभ्युदय को, विश्व-बन्धुत्व तथा विश्व-शान्ति की उदात्त भावना को सामने रखकर हुआ है।

प्रस्तुत कृति मुनिश्री की काव्यगत कृतियों में एक है। इसमें उनकी दार्शनिक, धार्मिक तथा नैतिक त्रिविध नई कविताएँ चयित की गई हैं, जिससे कृति सार्वभौमिक बन गई है। इसकी प्रत्येक कविता की भाषा-शैली अभिव्यंजना-शक्ति एवं भाव-गूढ़ता अनुपम, अनुत्तर, अद्वितीय है। ऐसी श्रेष्ठ कृति का प्रकाशन करते हुए हमें गौरव एवं प्रसन्नता का अनुभव होना स्वाभाविक है।

कृति के प्रेरणासूत्र—श्रद्धेय मुनिराज श्री महिमाप्रभ सागर जी महाराज, संयोजक—पूज्य मुनि श्री ललितप्रभ सागर जी म० और सम्पादक—भाई श्री मिश्रीलाल जी जैन के प्रति हम हार्दिक आभारी हैं, जिनके सहकार एवं सहयोग से कृति को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना सम्भव हो सका। अंत में, हम उदार हृदया श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी श्रीमान् ज्ञानचन्द जी गोलेच्छा, जयपुर और श्रीयुत् शान्तिलाल व्रजलाल भाई कोठारी, पटना के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहेंगे, जिन्होंने इस पुस्तक की उपयोगिता समझकर एक साथ इसकी क्रमशः २०० तथा १०० प्रतियाँ क्रय कर हमारे प्रकाशन-कार्य को प्रोत्साहन दिया।

प्रस्तुत कृति पर विज्ञ समीक्षकों एवं सुधी पाठकों के मन्तव्यों तथा सुझावों का स्वागत है।

प्रकाशक

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुभाशंसा

प्रिय चन्द्रप्रभ सागर तुमने,
ऊर्ध्व चन्द्र तक स्पर्श लिया है।
छू कर अन्तस्तल सागर का,
सार्थक अपना नाम किया है॥

कविता क्या है, मानवता के—
जीवन का रस-बोध प्रवाहित।
सन्तों की संध्या-भाषा में,
द्व्यर्थक मार्मिकता उद्भाषित॥

युग-युग जिओ, सघन तमस में—
अभिनव स्वर्णिम दीप जलाओ।
तप्त धरा पर सद्भावों के,
सुधा-मेघ चहुँ दिस बरसाओ॥

—उपाध्याय अमरमुनि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आमुख

निर्मल आत्मा समय है। सर्व विकल्पों से अतीत आत्मा का शुद्ध स्वभाव समयसार है। कथ्य-अकथ्य विचारों का कथन, लभ्य-अलभ्य अनुभवों का प्रगटन, दृष्ट-अदृष्ट दृश्यों का अंकन समय के हस्ताक्षर हैं।

समय सर्वाधिक अर्थपूर्ण तत्त्व है। इससे ज्यादा सार्थक तत्त्व मेरे लिए अप्राप्य रहा। चैतसिक जीवन की उपयोगिता के लिए चेतना के पास समय ही एक उपाय है, एक साधन है। समय तो सार है। इससे हटना साधना और जीवन के प्रस्थान-बिन्दु से असमीपस्थ रहना है।

समय की ही नींव पर दर्शन का भवन खड़ा होता है। समय का अस्तित्व उत्पत्ति, स्थिति और विनाश से युक्त है। उसके साथ यही तीन प्रकार की प्रक्रिया अन्वित है। अर्थात् कुछ सृष्ट हो रहा है, कुछ नष्ट हो रहा है और कुछ शाश्वत तथा सातत्य-संयुक्त है। समय का यही त्रिविध रूप दर्शन है। दर्शन विचार-मंथन का परिणाम है। समय और विचार का संगम हर कार्य को सिद्ध कर सकता है। महान् से महान् शोक को भी यह निस्तेज बना देता है। उचित समय पर उचित विचार का समागम आवश्यक है। वस्तुतः यह समय की सार्थकता का उपाय है।

समय का प्रत्येक क्षण मूल्यवान् होता है, जैसे स्वर्ण का हरेक कण। समय सबसे महान् है, देव से भी! देव को तो पूजा, प्रार्थना आदि के माध्यम से बुलाया जा सकता है, परन्तु बीता हुआ समय लाख प्रयत्न करने पर भी वापस नहीं बुलाया जा सकता। सत्यतः समय उत्ताल तरंगों की भाँति है। अतः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उसे रोका नही जा सकता, किन्तु उसका उपयोग करना ही उसकी बचत करना है। इसलिए कौन बुद्धिमान ऐसा है जो उपस्थित समय का अपनी समृद्धि के लिए उपयोग नहीं करता।

समय ही जीवन है। जीवन समय से ही परिनिर्मित हुआ है। किन्तु जीवन अत्यल्प समय का है। जैसे-जैसे समय बीतता है, वैसे-वैसे जीवन छोटा होता जाता है। सूर्य पूर्व मे उदित होने के साथ ही पश्चिम की ओर यात्रा प्रारम्भ कर देता है। सूर्यास्त से पहले, अंधकार की पकड़ से पूर्व हमें समय की अदृश्य निधि को और उसकी परतों में छिपे रहस्य को खोज निकालना है। हम सदा समय के प्रकाश को प्राप्त करने के लिए आतुर हैं, लेकिन भाग्य की विडम्बना ही कुछ ऐसी है कि उसकी उपलब्धि होने पर हम सोये मिलते हैं। जब जाग्रत होते हैं तो अंधकार के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

समय हाथ से निकल जाने पर केवल पश्चाताप ही हाथ लगता है, परन्तु बाद में पछताने से क्या लाभ ? जब कृषि सूख तो वर्षा किस काम की ! समय को बचाना तथा समय की शुद्धता जानना ही 'सामायिक' है। सामायिक की चरम परिणति ही समाधि है। इस अवस्था में समय ही एकमात्र अवशिष्ट रहता है—ऐसा प्रकाश-स्तम्भ जो प्रतिपल प्रभा प्रदान करे।

गणतन्त्र-दिवस,
१९८५

मुनि चन्द्रप्रभ सागर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कविता-क्रम

१.	अद्भुत कृति	...	१
२.	यात्रा	...	२
३.	मौन की भाषा	...	३
४.	जीवन - शिल्पी	...	४
५.	सोहम्	...	६
६.	आकार - निराकार	...	७
७.	प्रयोगशाला	...	८
८.	नाविक	...	९
९.	अन्धा उत्साह	...	१०
१०.	मूर्च्छा	...	११
११.	नाथता की ओर	...	१२
१२.	स्वारोहण	...	१४
१३.	क्षणभंगुर	...	१५
१४.	जागरण	...	१६
१५.	तुम्हारा ईश्वर — तुम हो	...	१७
१६.	इसे कहते हैं क्षमा / अहिंसा	...	१८
१७.	अन्तर् - द्वन्द्व	...	२०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१८. मनोमौन ... २१
१९. ज्योति ... २२
२०. शब्द - जाल ... २४
२१. राजपथ ... २५
२२. विलक्षण नाटक ... २६
२३. समरसता ... २७
२४. आत्मा वै परमेश्वरः ... २८
२५. प्रतिबिम्ब ... २९
२६. द्विपथी शैशव ... ३०
२७. वहीं के वहीं ... ३१
२८. हस्ताक्षर ... ३२
२९. भूमा की पेक्षा ... ३३
३०. सजगता ... ३४
३१. अपराजित ... ३५
३२. मार्दव ... ३६
३३. विडम्बना ... ३७
३४. विज्ञान से भेंट ... ३८
३५. सृष्टि का सन्त ... ४०
३६. शहीदों के प्रति ... ४२
३७. वर्तमान और अतीत ... ४३
३८. भीड़ भरी आँखें ... ४५
३९. आदमी ... ४६
४०. मुखौटे ... ४७
४१. दीप जले ... ४८
४२. सभ्यता ... ४९
४३. समय - सिन्धु में ... ५०
४४. अमर दीपावलियाँ ... ५१
४५. उपलब्धि की कला ... ५२
४६. ममत्व ... ५३
४७. आने के बाद ... ५४

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४८. परिग्रह ... ५५
४९. तब और अब ... ५६
५०. युग - विकृति ... ५७
५१. आश्चर्य ... ५८
५२. दशा ... ५९
५३. न्याय के द्वार ... ६०
५४. रक्त - पिपासु ... ६१
५५. ज्योतिर्मुख ... ६२
५६. निष्प्राण साहित्य ... ६३
५७. ऐसे होता है परिवर्तन ... ६४
५८. विध्वंस ... ६५
५९. युग - दर्पण ... ६६
६०. पुनर्रंग की अपेक्षा ... ६७
६१. परम्परा के प्रसंग ... ६८
६२. पुरुषार्थ ... ७०
६३. शिक्षा - प्रणाली ... ७१
६४. अपरिग्रह ... ७२
६५. पहरा ... ७३
६६. ग्राम और रोटी ... ७४
६७. बीज में वृक्ष ... ७५
६८. अवतार ... ७६
६९. उपेक्षा ... ७७
७०. परिवर्तन ... ७८
७१. विद्यालय ... ७९
७२. विकास - पथ ... ८०
७३. रोटी का प्रश्न ... ८१
७४. अनुत्तर उत्तर ... ८३
७५. एकता ... ८४
७६. शंकालु दीमक ... ८५
७७. माँ सरस्वती ... ८६

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि चन्द्रप्रभ सागर

आविर्भाव :

वि० सं० २०२१, वैशाख शुक्ल पक्ष ७

अभिनिष्क्रमण :

वि० सं० २०३६, माघ शुक्ल पक्ष ११

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समय के हस्ताक्षर

रचना-काल : सन् १९८३-८४ ई०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अद्भुत कृति

पलट - पलट कर
एक - एक पृष्ठ
पढ़ रहा
ध्यानपूर्वक
तितली - सी आकर्षक
एक अद्भुत कृति
वही है विश्व
वही है सृष्टि ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यात्रा

चली आ रही है
संसार की यात्रा पर
दूर-सुदूर से
निरन्तर गतिशील
जीवन की नौका
छू-छु कर
जन्म-मरण के
जर्जरित तटों को।
सुदीर्घ काल की यात्रा से
यात्रा की विकलता से
विह्वल, व्याकुल
मुक्ति-बोध होगा
इसी अन्तस् चेतना से
प्राप्त होगा जिस क्षण
आत्मा का द्वीप।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मौन की भाषा

विचित्र है
मौन की भाषा
बाहर से स्तब्ध
भीतर से मुखरित
भावों की उत्पत्ति
भावों का विनिमय
अनंकित हैं
शब्द - कोष में
वे अभिव्यक्त अर्थ
स्वर नहीं
आत्मा के संस्कार हैं
अगाध अर्थों के
अक्षय भण्डार हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जीवन - शिल्पी

पाषाण

रूप में भद्दा,

आकृति में बेडौल

जग की दृष्टि में उपेक्षित,

तिरस्कृत

उसका मूल्य है कितना ?

शिल्पी

गंभीर मुद्रा में

अर्जित अद्भुत कला से

अनवरत कर रहा है

चोट पर चोट

छैनी हथौड़ी निर्मम

कला की ओट ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दुग्ध में नवनीत
पाषाण में प्रतिमा
देवालय में दीप्ति
जन - जन से पूजित

धन्य है शिल्पी
शिल्पी की अद्भुत
शिल्प - कला
शिल्पी महान् है
मेरा पथ - प्रदर्शक
निर्माता

प्रज्ञा की छैनी से
उसने उतारा है
राग - द्वेष घृणा का कल्मष
प्रतिक्षण आ रहा है प्रकाश
हृदय - कक्ष से निर्वासित
अंधियारा
हे परम गुरु
प्रज्ञा - शिल्पी !
साँस-साँस में व्याप्त है
उपकार तुम्हारा ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सोहम्

अहम् का वक्तव्य
आत्मा की स्वीकृति है;
अहम्, इदम् का ऐक्य
सोहम् की प्रस्तुति है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकार-निराकार

देख रहे तुम
अपलक, अमन्द
जहाँ-जहाँ आकाश,
और जो देख रहे
वही कह रहे
यही है आकाश;
पा जाओगे
उससे भी पार
अन्तहीन आकाश ।
कारण,
खोज रहे तुम
रूप आकाश का,
है जहाँ अवकाश
वहीं - वहीं आकाश
रूप नहीं; अरूप है
कैसे देखोगे—
अरूप में रूप तुम
निराकार में आकार तुम !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रयोगशाला

गोपनीय है
आत्यन्तिक गोपनीय
मनुष्य की आन्तरिक प्रयोगशाला;
सार्वजनीन है
विज्ञान की प्रयोगशाला
देख सकता है प्रत्येक व्यक्ति
इस पर किये गये प्रयोग को ।
किन्तु
मानव के भीतर की प्रयोगशाला !
अत्यन्त निजी
नितान्त स्वयंगत
देख सकता है
प्रयोगशाला को
उसमें हुए प्रयोगों को
एक मात्र प्रयोक्ता ही ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नाविक

लम्बी है यात्रा
सागर विराट्
अप्रमत्त रहना
छुट न जाए
आत्म - धर्म की पतवार।
विवेक से चलाना
भरी हुई है
जीवन की नौका
ज्ञान - कर्म - भार से,
एक भी हो गया छिद्र
निमज्जित हो जाओगे
अनन्त सागर में
पहुँच न पाओगे
सागर के उस पार
जहाँ है मुक्ति का प्रकाश
चमकता स्वर्णमयी संसार।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्धा उत्साह

तुम उत्साह की बात करते हो
मगर
बेलगाम घोड़ा है
ज्ञानरहित उत्साह
उत्साह सही हो
अन्यथा
क्षति ही क्षति है—
अन्धे उत्साह से ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूर्च्छा

डूबे हैं जो
संसार - सागर में
उठे नहीं ऊपर
तैर नहीं सकते
उसके उत्ताल प्रवाह में
बिना तिरे
पहूँचेगे कैसे
सागर के उस पार ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नाथता की ओर

ऐश्वर्य और राज - सत्ता के बीच
तथागत महावीर
तुम ही स्वामी थे
अपने आप के
निसंग
संसार - सागर में
चलायी थी
देह रूपी नौका
आत्मा रुपी नाविक ने
साधना की सबल
पतवारों के सहारे।
दृष्टि थी सम्यक्
साधन साध्य के प्रति
विवेक विशुद्ध था
वैराग्य अनासक्त

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चिर संग थीं

लोक - मंगल की ऋचाएँ

विश्व-कल्याण की गाथाएँ

तुमने प्रकाशित की

अनुभूत परिभाषा

सनाथ - अनाथ की

दुष्प्रवृतियों में आत्मा अनाथ है

सत्प्रवृतियों में सनाथ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वारोहण

आ जाए
'पर' से 'स्व'
मिल जाए
'स्व' में 'स्व'
सदा-सदा के लिए
प्रकट होगी
आत्म - शक्ति की
फिर निर्धूम अनन्य ज्योति ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्षणभंगुर

हम क्षणभंगुर,
तुम क्षणभंगुर,
खेल रहे हैं
क्षणभंगुरों से क्षणभंगुर।
बना रहे हैं क्षणभंगुर ही
क्षणभंगुरता का इतिहास;
शाश्वतता का कैसे हो
फिर हमें विश्वास
कितना पागल संसार ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जागरण

भेड़ समझकर
भ्रमवश स्वयं को
घूमता रहता है
भेड़ - समूह के साथ
नृसिंह ।
दर्शन करता है
जब स्व - रूप का
सरोवर के शीशे में
हो जाता साक्षात्कार
शाश्वत सत्य का
फिर तो पर्याप्त है
भेड़ो को भगाने के लिए
नृसिंह का एक कदम
एक दहाड़,एक गर्जन ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हारा ईश्वर – तुम हो

ईश्वर तुम्हारा
तुम्हारे भीतर
तुम ही हो अपने ईश्वर।
तुम ही कारक
तुम ही नियामक
या संचालक
तुम ही हो संहारक
अपने जगत् के
पार कहाँ
तुम्हारी लीलाओं का
तुम ही हो महालीलाधर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इसे कहते हैं क्षमा/अहिंसा

विषधर या
बिषाक्त ज्वार का उभार
विषभरी भयंकर फुंकार
विषपूर्ण ज्वालाएँ
क्रोध का ज्वलंत उदाहरण
चण्डकौशिक

क्रोध में रत
हिंसा में मत्त
रुधिर में मन
निबास निर्जन
भयंकर
दैत्य - सा विकराल
तप्त लौह - सा ताप
मार रहा
विषदंत, क्रोधी ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क आश्चर्य घटित हुआ
आक्रोश की धारा बही
क्या यह रक्त है ?
नहीं, दुग्ध
क्रोध के प्रतीकार में
क्षमा का अनुपम स्रोत है

आत्म - सम्बल का स्तम्भ
करुणा का प्रतिबिम्ब
दया का सागर
अहिंसा का गायक
खड़ा है निर्भय
ज्योतिर्मय
तथागत महावीर

क्रोध और क्षमा
हिंसा और अहिंसा
लौह और पारस
चण्डकौशिक और महावीर
क्षमा की जय,
अहिंसा की विजय ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्तर्-द्वन्द्व

जब सन्यास में होते हैं
लगता है
गार्हस्थ्य अच्छा;
जब गार्हस्थ्य में होते हैं
लगता है
सन्यास अच्छा ।
जैसे पिंजरे के पक्षी को
लगता है
आकाश अच्छा;
आकाशविहारी पक्षी को
लगता है
पिंजरा अच्छा ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मनोमौन

मनोमौन

मुनित्व का विनियोजन

ध्यान का अन्त्य चरण

अवशेष कहाँ फिर

विचार

विचारों में विकार ।

निर्विचार

निर्विकार ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्योति

दीप की ज्योति
आत्म - ज्योति का
अनुपम प्रतिबिम्ब है
अलौकिक आत्म - ज्योति
प्रभा - पुञ्ज का
परम प्रतीक है,
सत्यं - शिवं - सुन्दरम्—
के समीप है ।
दीप और आत्मा
दोनों में प्रकाश है
अद्‌भुत द्वन्द्व समास है
बाह्य - आलम्बन तुच्छ है
आत्म - उदय, आत्म - उद्धार
निर्मल, निष्कलंक है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आलोक - आकांक्षी
आत्म - परीक्षण हेतु
अन्तस् - निरीक्षण हेतु
दीप - ज्योति से
प्रकट करते हैं
आत्म - आलोक ।

राख हो जाता है
कषाय - कचरा
जलकर नष्ट हो जाता है
तृष्णा - पतंगा
बचेगा भी कहाँ फिर
कर्म - अँधियारा
प्राप्त कर आत्म - दर्शन
होकर परमात्म - शरण
शेष फिर कहाँ मरण ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शब्द-जाल

उलझो मत
शब्दों के दांव-पेंच में
अन्यथा
मकड़ी की तरह
उलझ पड़ोगे
अपने ही गुंथित जाल में
तुम्हें मतलब है
शुक्ति से या मोती से ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राजपथ

गुजरने पर
तर्क की
टेढ़ी - मेढ़ी पगडंडियों से
उपलब्धि होती है
सत्य के राजपथ की
पश्चात्
यात्रा प्रशस्त है
पश्चवर्ती जीवन की।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विलक्षण नाटक

संसार के रंगमंच पर
चिर क्षणों से देख रहा हूँ
एक विचित्र नाटक—
नृत्य करा रहा है
कर्म - नायक
जीव - नट को
कहलाता है
कभी राजा,
कभी रंक;
कभी साधु,
कभी पंडित;
है कोई ऐसा वेश
पहना न हो
छोड़ा न हो इसने
चौरासी लाख योनियों में।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समरसता

'तूँ' का 'मैं, में निमज्जन
'मैं, का 'तूँ' में निमज्जन
हो पाएगा तभी
समरसता का
सच्चा सर्जन ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आत्मा वै परमेश्वरः

कस्तूरी की गन्ध पा
खोज रहे क्यों
धरती - अम्बर !
सन्धान कर रहे
जिस वस्तु की तुम,
पड़ी है वह तो
तुम्हारे खीसे - अन्दर।
तुम्हारी सम्पदा — तुम हो
आवेष्टित है
चिर काल से वह
निज घट - भीतर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिबिम्ब

सर्वेक्षण कर रहा हूँ
समय के दर्पण में
जनजाति के प्रतिबिम्ब को।
प्रभावित हैं सब
निष्क्रियता से
उपदेश था
निष्काम होने का;
हो गये निष्क्रिय हम
निष्क्रियता में सक्रिय हम ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्विपथी शैशव

जीवन - निर्माण शिशु का
गमलों में पौधेवत्
मुर्झा सकता है
नन्हा - सा लू का झोंका ।

जीवन - निर्माण शिशु का
अरण्य के वृक्षवत्
बाल न बाँका कर सकता
कोई झंझावात ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वहीं के वहीं

चलता रहता है
बन्धी लकीर में जीनेवाला
वर्तुलाकार
कोल्हू के बैल की भाँति।
वापस आ पहुँचता है
लम्बी यात्रा के बाद भी
वहीं के वहीं
प्रारम्भ की
जहाँ से यात्रा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हस्ताक्षर

ऐसे हस्ताक्षर करो
अमिट बन जाए जो
समय के शिलालेखों पर।
ऐसे हस्ताक्षर अर्थहीन
मिट जाए अगले पल जो
बालू के टीलों पर।
पानी पर खींच लकीरें
और कहते
अमिट हमारे हस्ताक्षर !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भूमा की उपेक्षा

हिसाब रख
रत्ती - रत्ती का
उसे बचाने के चक्कर में
गँवा दिया
निधि का आनन्द,
बचा - बचा कर
बिन्दु - बिन्दु को
खो डाला
रत्नाकर - सिन्धु ।
समय तो बीत गया
कंकड़ . पत्थर जुटाने में,
भवन - निर्माण से पूर्व
समय
मौत का शिकंजा बन गया ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सजगता

सूर्य पूर्व में उदित हुआ
शुरू हो गई यात्रा
पश्चिम की ओर।
जीवन
अत्यल्प है,
शिकार बनने से पहले
अंधियारे के
प्राप्त प्रकाश से
मार्ग बना,
मार्गफल पालें
कहीं प्रायश्चित न मरना पड़े
सूर्यास्त होने पर
अँधेरे में खोने पर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपराजित

यौवन का तूफान
उत्तेजना की आन्धी
भयंकर रूप में ।
मैं पथिक हूँ
लेकिन मुझे खतरा नहीं,
दौड़ता नहीं
बढ़ता हूँ एक-एक पग
समझ - समझ कर
सम्हल - सम्हल कर ।
बवण्डर की बिदाई के बाद
दौड़ूँ / घूमूँ
चाहे जहाँ,
चाहूँ जैसे ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मार्दव

प्रवाह
भयंकर से भयंकर
तीव्र से तीव्रतर
धराशायी हो गये
मदभरे
बड़े - बड़े वृक्ष
महासंघर्ष में।
अस्तित्व बनाया रखा
नदी के मध्य रही
घास ने अपना
भीषण प्रवाह में भी
जीवन - संघर्ष में भी,
पार हो गयी
नम्र घास
निरापद रूप से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विडम्बना

विचारों की भीड़ भरी आँखें
देख रही हैं
पंथों की अधिकता,
आचार की विभिन्नता।
पथ-प्रदर्शक अन्धा है
अपेक्षा है
अभीष्ट यात्रा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विज्ञान से भेंट

विज्ञान - युग
स्वर्ण - युग
कण - कण में
मानव के मन - सागर में
सागर है गागर में
सिन्धु है बिन्दु में
ज्ञान है विज्ञान में ।

आदि से अर्वाचीन
सुन्दर और समीचीन
हरियाली
बढ़ती खुशहाली
चारों ओर
विज्ञान का प्रबल भोर
भोग और योग
विचारों का प्रयोग ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विज्ञान का जादू
लघु से विश्व - कोश तक
प्रभा से प्रभाकर तक
विज्ञान की यादें
बिखरी पड़ी हैं
अखिल विश्व में ।

विज्ञान और धर्म
समीप आये
विश्व - शान्ति के लिए
दोस्ती निभाए ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सृष्टि का सन्त

नागरिकता का पालन
विषमता का अन्त है
वह सृष्टि का सन्त है।

परिशुद्ध नागरिक कहाँ चाहिये ?
क्यों, किधर चाहिये ?

विजय-मंच की देहरी पर पहुँचने के लिए,
युग की समस्या के हल के लिए,
संसार में शान्ति के लिए ।

आत्म - विजय
सच्ची विजय है
समस्याओं का निराकरण धर्म है
शान्ति जीवन का लक्ष्य है
यही नागरिकता का रहस्य है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपेक्षित है

नागरिकता का आचरण

हम सब के लिए

नगर के, प्रान्त के,

राष्ट्र के, विश्व के

उद्धार के लिए

संस्कार के लिए।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शहीदों के प्रति

शहीदों
तुम्हीं हो कोहनूर
शिलालेख
इतिहास के स्वर्णिम
पृष्ठ।
दिग्दिगन्त व्यापी है
तुम्हारी आभा,
विस्मरण कर रहा है
जिस क्षण से देश,
दूषित हो रहा है
उस क्षण से परिवेश।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान और अतीत

मैं खड़ा था
नील गगन के नीचे
श्यामल धरती के ऊपर
शहर की सड़क के किनारे,
निरीक्षण कर रहा था
समीक्षक - दृष्टि से
वर्तमान और अतीत की दूरी।

सब कुछ बदल गया
समय बहुत कुछ छल गया,
आलिंगन रह गये;
प्यार चला गया,
वाणी में मृदुता;
स्नेह छला गया।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परस्पर उपकार की भावना
संसृति की धरोहर
तोड़ रही साँसें
यह निरुद्देश्य लम्बी भीड़
किस ओर दौड़ रही है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भीड़ भरी आखें

भीड़ देखने जा रही
उनकी आँखें
अपनी ओर दृष्टि नहीं
ओझल है
भीड़ में अपनी आँखें
देखेगा भी कौन, भला !
अपनी सुन्दर आँखों को।
भीड़ भरी आँखों में।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आदमी

आदमी बड़ा विचित्र
मनुष्यत्व भी
पशुत्व भी
हर आयाम से आप्लावित,
आक्रोश और आवेश से
घृणा और स्वार्थ से,
जब इसका बीभत्स रूप
आकस्मिक प्रगट होता है
तब पशुत्व भी
इसके कृत्यों से
लज्जित होता हैं,
रोता है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुखौटे

महावीर का अभिनिष्क्रमण
दूर होता जा रहा है
हमारी चेतना से,
हमने कोढ़ युक्त देह पर
ओढ़ रखे हैं रत्न - कम्बल
मुखौटे ही हैं हमारा सम्बल ।

सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह
नारों का है सम्बल
आचरण में
छल ही छल
हे महावीर !
हम कब होंगे निश्छल ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दीप जले

घर - घर दीप जले
ध्वंस हुआ
कब - कब अँधियारा ?
देवालय में दीप जले
प्रतिदिन, प्रतिपल ही
नष्ट हुआ अज्ञान - तिमिर कब ?
टूटी कब मिथ्यात्व की कारा ?
दीपावली में
हर मुंडेर पर दीप जले;
उससे भी कब
दूर हुआ जग का अँधियारा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सभ्यता

कितनी विकसित,
कितनी सुन्दर है
यह सभ्यता ?
भय है
कहीं निगल न जाए
हत्यारों के अस्त्र-अजगर
युद्ध की विभीषिका
सभ्यता और संस्कृति के
जन्में - अजन्में शिशुओं को।
रोक दो
शस्त्रों का आविष्कार
नर - संहार ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समय-सिन्धु में

समय - सिन्धु में
डूब गया सब
शेष बचीं स्मृतियाँ,
पाप - पंक को
धो न सकेंगी
जल से पूरित नदियाँ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अमर दीपावलियाँ

युगों से प्रज्वलित दीपावलियाँ
अतीत की सुखद स्मृतियाँ
साक्षी है इतिहास
आदर्श स्थापित कर
विजन से लौटे राम
उनके स्वागत में जलाये
दिव्य दीप
जन्म - मृत्यु - बन्धन—
विमुक्त हुए महावीर
निर्वाण की स्मृति में जलाये
सुनहरे दीप
ज्योति अपलक - अमन्द ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उपलब्धि की कला

मूढ़ मत समझो
ग्रामीणों को
शहरियों की तरह
खाली कुँए में
डोल डालते रहें
खींचते रहें
वृद्ध हो जाये
बगैर कुछ पाये जो ।
जानते हैं ग्रामीण
उपलब्ध करना पानी को
खोद कर और गहरा
खाली कुँए को ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ममत्व

तैर आता है
मेरी आँखों में
मस्तिष्क की तरंगों में
वह भिखारी कभी - कभी,
झगड़ रहा था
सार्वजनिक सड़क के लिए
अपनी बताकर जो ।
उसी का है
सड़क का वह हिस्सा
भीख मांगता
बैठकर वह जिस पर ।
लाभ उठाकर
सार्वजनिकता का
कर लिया एकाधिकार ।
सार्वजनिकता / सार्वजनीनता के साये में
बोल रहा है
एकजनीन एकाधिकार ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आने के बाद

एक –

एक –

कर

सद्‌गुणों के पन्ने

उन्होंने बटोरे,

उद्यम का फल

हम पर छोड़ा;

आया जीवन में ज्वार

हमने उठा उन्हें

रद्दी की टोकरी में फेंका।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिग्रह

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में
परिग्रह की वृत्ति
सुसंस्कारों की इति
जीवन के हर अंश में
अंश के भी वंश में।
अपेक्षित है
पैसा
संसृति पर
दुर्दिन है कैसा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तब और अब

तब

चीर - हरणकर्ता
दुःशासन के प्रयत्न
हो गए थे निरर्थक
कृष्ण रक्षा - कवच
लोक - मंगल का प्रहरी।

अब

भक्षकों के साथ
जुड़े रक्षक
दिन के प्रकाश में
द्रोपदियों का होता है
चीर - हरण,
कहाँ है शासन,
कहाँ है शरण ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

युग - विकृति

व्यभिचार,
कुचक्र,
चोरी
बन गयी
मानव जाति की
केन्द्रीय नीति
हो रही है
परिनिर्मित इससे
भावी जीवन - पद्धति;
आधुनिकता की विकृति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आश्चर्य

महावीर के अनुयायी
वणिक है
आश्चर्य
स्वयं महावीर क्षत्रिय थे
दुर्लभ आत्म - तत्व की
उपलब्धि के लिए
उन्होंने अस्त्र - शस्त्र
विसर्जित कर दिए;
हम निर्जीव हाथों में
अस्त्र - शस्त्रों को थामे
अहिंसा के आवरण में
कायरता को छिपाते हैं,
और अनुयायी
महावीर के कहाते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दशा

कच्ची मिट्टी से बने
झोंपड़ों में
जीवित कंकाल
मृत्यु के मुख में
झूलते इन्सान।
यह मनुष्यों का सदन नहीं
है विराट् कब्रिस्तान,
जहाँ दफनाये जाते हैं
जीवित इन्सान।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

न्याय के द्वार

खटऽ

खटऽ

खटऽ

खटखटाए

न्याय के द्वार,

पर न्याय कहाँ

अन्याय के शासन में ?

दुबकी बैठी है चेतना

कल्मष की कथरी ओढ़े,

स्वयम् मधुमास

बुला रहा है पतझर ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रक्त-पिपासु

रक्त को अमृत समझ
पी रहे हैं ये
मानवता के रक्त - पिपासु
जोंकवत् ।
धकेल रहे हैं
विनाश की ज्वालामुखी में
विकासोन्मुख विश्व को।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्योतिर्मुख

साहित्यकार
द्युतिकार
देते हैं संसृति को प्रकाश
खण्डहरों में छिपे वैभव को
तेल में छिपी आभा को
जीवन पर्यन्त ।
बीत जाता है
ऐसे ही
जीवन का बसन्त ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

निष्प्राण साहित्य

अमुखरित है
जिस साहित्य में
साहित्यकार का
प्रकाशक व्यक्तित्व
बोलता जीवन ।
वह साहित्य,
साहित्य नहीं;
मात्र है
निर्जीव शब्दाक्षरों का समूह ।
आकर्षण प्राण का है
शव का कभी नहीं !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ऐसे होता है परिवर्तन

नीति का लोहा
चित्त की भट्टी में
चिन्तन की अग्नि में
परितप्त कर
संयोजनात्मक कदम बढ़ाकर
पीटो,
बुरी तरह पीटो
परिमार्जन के हथोड़ों से
स्वयं लोहार बन
अन्धविश्वास,
पुरानी परम्पराओं के रजकण,
नव निर्माण के साँचे में
ढ़ाल दो उसे।
उपस्थित होगा
एक नया रूप,
परिष्कृत संस्कृति का स्वरूप।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विध्वंस

इधर
विज्ञान का विकास
उधर
मानव का विनाश
कर्त्ता - भोक्ता
दोनों के सम्मुख
खड़ा है
विध्वंस का कगार ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

युग - दर्पण

युग के दर्पण के
बिम्ब बहुत धुँधले हैं,
सब घृणा, द्वेष, मत्सर
के ही पुतले हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुनर्रंग की अपेक्षा

उड़ने लग गया है
    रुचिर रंग
        विश्व के गोलार्द्ध का।
अपरिहार्य है
    दोबारा रंग करना,
दौर्लभ्य है मगर
    ऐसा कुशल कलाकार रंगेरा
        जो पुनः रंग दे
            सुनहरे रंगों से
            वैसा ही,
            जैसा पहले था—
            आकर्षक,
            प्रभावक।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परम्परा के प्रसंग

पुराने ढ़र्रे पर
चल रहा है जीवन
ग्राम के निवासियों का
शहर के अछूतों का
सदियों से
ग्राम्य चिपके हैं
बुरी तरह
रोजमर्रा के जीवन से
परम्परा के बन्धन से ।

ग्राम्य इच्छुक नहीं
ढ़ंग बदले,
रंग बदले
उनके रहन - सहन का,
रीति - रिवाजों का

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रेरित होकर
नवीनता के आग्रह से,
विज्ञान के प्रभाव से ।
नहीं चाहते ग्राम्य
खिल्ली उड़ाना
पुरखों के आदर्शों की ।
नहीं चाहते
कलंक के धब्बे लगाना
पुरखों के पद-चिह्नों पर
ग्राम का जीवन
क्या रूढ़ियों का धाम
प्रगति का विराम ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुरुषार्थ

क्यों करते हो
किसी की जी - हज़ूरी,
इर्द - गिर्द चमचागिरी ?
खानी चाहिये
तुम्हें
कमाई पसीने की ।
दो हाथ मिले हैं
श्रम करो
वर्षा होगी
घर में सोने की ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शिक्षा-प्रणाली

बना दिया और चौड़ा
आधुनिक शिक्षा-प्रणाली ने
जीवन की खाइयों को,
आदमी,
आदमी नहीं;
मात्र है
सूचनाओं से भरा थैला।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपरिग्रह

संचित कर असीम धन
क्यों हो उन्मन ?
शोषित मनुजों का
श्राप है,
अनीति से संचित धन
पाप है ।
कल से अपरिचय
पीढ़ियों के लिए संचय;
कर्म - तूलि निष्प्रभ
नहीं है
जब अशुभ कर्म
उदय में आयेंगे,
सम्पति के कीर्ति - कलश
बिना गिराये ही
गिर जायेंगे ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पहरा

बोलना भी आज दुर्लभ,
मौन पर पहरा खड़ा है;
प्रजातंत्र के द्वार पर
यह कौन-सा शत्रु खड़ा है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्राम और रोटी

चिन्ता कहाँ ग्रामों को
मोती की ?
विकराल है समस्या
रोटी की,
शहरों ने छीन ली
रोटी
और दृष्टि में है
लंगोटी ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बीज में वृक्ष

बालक
मुर्गी से बदतर
कुरेद डाला
बागवान द्वारा आरोपित
सुनहले बीज को
रौंद डाला बीज में
वृक्ष के भविष्य को ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अवतार

जब - जब
धर्म का होता ह्रास
तब - तब
ईश्वर लेते अवतार,
स्रष्टा
सृष्टि का निर्माण कर
नशे की गोलियाँ खा
चैन से सो गये
जब रखवाली ही
नहीं करनी थी
तो इतनी विषमताएँ
क्यों बो गये ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उपेक्षा

सताया है बुरी तरह
अपनों ने,
क्या करें बात
परायों की ।
परिताप दिये
इस कदर
मित्र - दोस्तों ने
जाती रही शंसा
अन्तस्करण से
शिकायत करनी थी
जो दुश्मनों की ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिवर्तन

प्रतिपल
जीवन का परिवर्तन
प्रज्ञा का स्थानान्तरण
चेतना का परित्याग
धारण करते नया रूप
एक दिशा से छोड़ा
बदला मनुष्य का स्वभाव
पहना मुखौटा,
गिरगिट के समान ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विद्यालय

आज के द्रोणाचार्य को
देते नहीं
एकलव्य
दिखाते हैं अंगूठा
वर्तमान शिक्षा - प्रणाली
उत्तम
दम्भ बहुत झूठा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विकास-पथ

अपेक्षित है
विकासशील राष्ट्रों के प्रति
सहयोग और समान अधिकार,
मानव - मानव में,
राष्ट्र - राष्ट्र में
बंद हों विषमता के द्वार।
यही है विश्व में
उन्नति का साधन,
समस्याओं का समाधान
फैल सकता है जिससे
विश्व-बन्धुत्व का प्रकाश।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रोटी का प्रश्न

बड़ा जोशीला,
बड़ा उत्साही
बैठा झोंपड़ी में
अध्ययनरत युवक
दिन में संजोये सपने
रात्रि में देखे—

मैं कवि बनूँगा
साहित्य संसार में
तुलसी की तरह,

सेवा करूँगा
मातृभूमि की
शिवाजी की तरह,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आविष्कार करूँगा
विज्ञान - लोक में
न्यूटन की तरह ।

पर
क्या अन्त है
इन कल्पनाओं का !
निराश हो जाता है
बेचारा नवयुवक
जब सम्मुख आता है
प्रश्न रोटी का ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुत्तर उत्तर

उत्तर नहीं देता है
जब कोई
क्रोधित पुरुष को,
तो यह मत समझो
वह अनुत्तर है
एक अच्छा उतर है
कुछ उत्तर न देना भी।
जरुरत है
ऐसे ही उत्तर की
क्रोधित मानुष को।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एकता

काट सकता है
एकाकी चूहा
लौह की तिजोरी को,
भयभीत क्यों है
फिर बिल्ली से।
करले एकता अगर
चूहे मिलकर सकग्र
खाल खींच सकते हैं
बिल्ली तो क्या
बाघ की भी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शंकालु दीमक

संशय - दीमक
खोखला कर रहा
जीवन - वृक्ष
जड़ से,
श्री - शून्य हो रहा
फल से,
जो प्रश्न
आज से है
वही है
कल से।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माँ सरस्वती

सभ्यता और संस्कृति
अग - जग को
ज्योतिर्मय कर दे,
संस्कार और चारित्र
की सुवास से
जीवन के आंगन
को भर दे,
श्रद्धा और मानवता से
मस्तिष्क मनुज का
उर्वर कर दे,
हे सरस्वती, माँ जिनवाणी
ऐसा वर दे।

८६

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समय के हस्ताक्षर

जयश्री प्रकाशन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org